पौर्णिमा

ॐ Date 30/3/10

गुरु कार्य एक पुजा

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

हमारी भारतीय संस्कृती मे पुजा को बडा महत्व दिया गया है। अपने इष्टदेव की मुर्ती को एक निश्चीत स्थिती मे रख कर क्रमबद्ध तरीके से पुजा करना। और एक आध्यात्मीक स्थिती को प्राप्त करना यह मनुष्य की दिनचर्या का एक भाग है।

सर्वप्रथम स्नान करना अपने शरीर का शुद्धीकरण करना विशिष्ठ वस्त्र पहनना विशिष्ठ स्थान और आसन पर बैठना और एक निश्चीत लक्ष्य की और क्रमबद्ध तरीके से पहुचने के उद्देश से प्रथम अपने विचारो पर नियत्रंण करना अपने मन को एकाग्र करना और अपने इष्टदेव को नमस्कार कर के पुजा की विधी प्रांरभ करना इष्टदेव के रूप मे रखी गयी मुर्ती को प्रथम पानी से स्नान कराना बाद मे दुध से स्नान कराना बाद मे पानी से फीर से स्नान कराना उसे बडे भाव के साथ कपडे से पोछना उसे अपने पुर्व स्थान पर स्थापीत करना बाद मे उसे चंदन लगाना, पुष्प चढाना बाद मे प्रसाद अर्पण करना अगरबत्ती लगाना और अंत मे आरती करना और आरती के कारण अपने आप को, अपने "आत्मा" को समर्पीत करना लेकीन मुर्ती को "माध्यम" मान कर यह ठिक वही प्रक्रीया है, जिसमे आयने मे मनुष्य अपना चेहरा देखता है, यह सारी प्रक्रीया एक ही लक्ष्य को रख कर की जाती है, की आत्मा के रूप मे परमात्मा हमारे ही भितर बैठा हुआ है। उस तक पहुचना है, और जब हम इस प्रक्रीया से अपने आत्मा तक पहुचते है,

तो शरीर का अस्तीत्व समाप्त हो जाता है, और फिर सारी समस्याऐ, बिमारिया, संकट, अशांन्ती, और कुविचार, ईर्षा, अंहकार, मोह, सभी समाप्त हो जाता है, क्योकी यह सब शरीर से ही संमन्धीत होता है, जब शरीर का भाव ही समाप्त हो गया तो फीर रह गया केवल "आत्मा" और सब का आत्मा पवीत्र राव शुद्ध ही होता है, क्योकी वह "साक्षात परमात्मा" का ही स्वरुप है, और अपनी आत्मा तक पहुचने के बाद प्रत्येक मनुष्य एक असीम "आत्मशांन्ती" का अनुभव करता है, उस "अनुभुती" को अनुभव करके ही जाना जा सकता है, इस आत्मा की अनुभुती तक मनुष्य तभी पहुच सकता है, जब पुजा संपुर्ण पवीत्र समर्पीत भाव से की गयी हो, अन्यथा वह पुजा केवल दिनचर्या का एक भाग बन कर जायेगी, ठिक इसी प्रकार से "गुरु कार्य" भी एक अपनी आत्मा तक पहुचने का मार्ग है, बशर्ते वह भी संपुर्ण समर्पीत भाव से कीया जाये, पुजा और गुरुकार्य दोनो ही नदी के किनारे पर बैठने जैसी स्थिती प्रदान करते है, नदी के किनारे पर बैठे रहो कभी ना कभी तो लहर आयेगी याने नदी से दुर बैठे हुये व्यकती से नदी के किनारे पर बैठे व्यकती तक पानी लहर पहुचने की संभावना अधीक होती ही है, गुरु कार्य मे भी ऐसा ही है, गुरुकार्य करने के पुर्व थोडा शांन्त चित्त रख कर गुरुकार्य करने का क्या लक्ष्य है, उसे समझना चाहीये और प्रथम लक्ष्य को निश्चीत किया जाय और बाद मे उस निश्चीत लक्ष्य की ओर एक निश्चीत एकाग्रता और क्रमबद्ध तरीके से पहुचा जाये और समय² पर यह भी ध्यान रखा जाये की हम उस लक्ष्य की ओर बढ रहे है, या नही

क्योंकी कई बार लक्ष्य की ओर बढते समय ही दिशा भुल होने की संभावना अधीक होती है, मेरे हिमालय के प्रवास के दौरान सदैव मेरा ध्यान अपनी दिशा की ओर ही अधीक होता था "गती" से अधीक ध्यान दिशा की ओर ही होना चाहिये, क्योंकी की कई बार गती के चक्कर मे ही हम लक्ष्य से भटक जाते है,

अभी हाल ही ऐसे ही गती के चक्कर मे पडे "१३ साधकों" का ध्यान अपने लक्ष्य की ओर से भटक गया था और वे रास्ता भुल गये और उन्ही की गलती अन्य साधक न करे इसी लीये यह "संन्देश" देने की प्रेरणा मुझे मिली है, आपकी गती कम हो चलेगा आपकी दिशा सही हो होनी चाहिये अन्यथा साधक अपनी शक्ती और समय दोनो ही गंवाता है, "गुरु" एक माध्यम है, जैसे ईष्टदेव की मुर्ती भी एक माध्यम ही होती है, "गुरु" के लिये कार्य करना गुरुकार्य कहलाता है, याने गुरु एक माध्यम है, और गुरुकार्य एक "कर्मपुजा" है, तो गुरुकार्य भी शारीरीक पवीत्र स्थीती, पवीत्र मानसीक स्थिती, और "अपेक्षा रहीत" भाव के साथ ही की जानी चाहिये तभी साधक गुरु रुपी माध्यम पर एकाग्रता बनाये रख सकते है, और "गुरु" भी माध्यम है, वह मंझील नही है, केवल मार्ग है, अपने भितर के आत्मा रुपी "गुरु" तक पहुचने का और जब तक अपने आत्मारुपी गुरु तक साधक नही पहुचता तब तक उसी यात्रा पुर्ण नही होती है, और "गुरुकार्य" भी पुर्ण नही होता है, गुरु एक जिवंत माध्यम है, और हम भी जिवंत है, इसी लीये जिवंत मनुष्य के लिये जिवंत माध्यम अधीक पास का है

"गुरुकार्य" करना एक नंगी तलवार पर चलने जैसा ही है, अगर संतुलन गया तो कटने मे देर नही लगेगी, यह गुरु कार्य का दोष भी कहा जा सकता है, जब कभी कोई गुरु के लिये साधक गुरुकार्य करता है, तो सारी सामुहिक शक्तीया उसके पिछे हो जाती है, और साधक की शक्ती से अधीक कार्य उससे हो जाता है, और मे का भाव स्वाभाविक रुप से आ ही जाता है, और लक्ष्य से साधक भटक जाता है, और एक गलत ही दिशा मे साधक चला जाता है, और जब पता चलता है, तब तक वापस आने के लिये उसके पास उम्र ही बाकी नही रहती है, इसलीये अपने लक्ष्य को निश्चीत रख कर एक नियंत्रीत गती से ही गुरु कार्य करना चाहीये,

"गुरुकार्य" हम अपने आत्मा तक पहुचने के लिये करते है, और आत्मातक पहुचने के बाद जो आत्मशांन्ती मिलती है, उससे ही आत्मा प्रसन्न होता है, और यह प्रसन्न आत्मा ही हमे जिवन मे "आत्मबल" प्रधान करता है, गुरु कार्य करते समय हमारा चित्त अपने गुरु पर है, तो ही समझीये हमारे हाथ से गुरु कार्य हो रहा है, जब गुरुकार्य करते समय हमारा चित्त अन्य साधको पर जाने लगे तो समझीये हम दिशा भुल गये है, शिघ्र "गुरुकार्य" को रोके और ध्यान करे अपने आप को संतुलीत करे, आपने गुरुकार्य नही किया तो गुरुकार्य रुकने वाला नही है, वह तो परमात्मा का कार्य है, वह तो होगा ही वह नही रुकेगा। "समर्पण ध्यान" मे एक साधक का कोई अस्तीत्व ही नही है, तुमको साधको मे एक साधक रहा क्या और नही रहा क्या लेकीन साधक की सामुहिकता छुट गयी तो उसका सर्वस्व छुट जायेगा।

एक कुतीया को भले ही आठ बच्चे हो उसे अपने सारे बच्चे प्यारे लगते है। और कुतीया एक बच्चा भी खोना नही चाहती मेरी भी स्थिती उस कुतीया जैसी ही है, मैं लाखो बच्चो मे से भी तुझे अकेले को भी खोना नही चाहता हूँ, मेरे मन में प्रत्येक साधक के लिये समान ही प्रेम है, इसी लीये मुझे प्रत्येक साधक प्यारा है। आप सभी सामुहीकता मे बने रहे है, और गुरुकार्य के माध्यम से सभी अपने आत्मा तक पहुँचे और प्रत्येक साधक ही "गुरु" हो जाये इसी शुद्ध इच्छा के साथ - - -

आपका
बाबास्वामी
30/3/2010